P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राजस्थान के भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

सुनील कुमार अग्रवाल
प्राचार्य,
श्री अग्रसेन महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,
हिण्डौन सिटी,
करौली, राजस्थान

सारांश

आज पर्यावरण एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है, लेकिन आज लोगों में इसे लेकर कोई जागरूकता नहीं है। ग्रामीण समाज को छोड दे तो भी महानगरीय जीवन में इसके प्रति खास उत्सुकता नहीं पाई जाती। परिणामस्वरूप पर्यावरण सुरक्षा महज एक सरकारी एजेण्डा ही बनकर रह गया है। जबकि यह पूरे समाज से ही बहुत घनिष्ठ सम्बंद्ध रखने वाला विषय है। जब तक इसके प्रति लोगों में एक स्वभाविक लगाव पैदा नहीं होता पर्यावरण संरक्षण एक दूर का सपना ही बना रहेगा। पर्यावरण का सीधा सम्बंद्ध प्रकृति से है। अपने परिवेश में हम तरह–तरह के जीव–जन्तु, पेड–पौधे तथा अन्य सजीव व निर्जीव वस्तुएं पाते हैं। ये सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण का ज्ञान शिक्षा मानव जीवन की बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर शारीरिक–मानसिक, सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक बुद्धि एवं परिपक्वता लाना है। ऐसा तभी संभव है जब बालकों को शुद्ध पर्यावरण में रहने का अवसर प्राप्त होगा।

मुख्य शब्द : भावी शिक्षक, पर्यावरण, जागरूकता, अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु, मानव सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। प्रकृति में इन सब की मात्रा और इनकी रचना कुछ इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलनमय जीवन चलता रहे। विगत करोड़ों वर्षों से जब से पृथ्वी पर मनुष्य, पशु–पक्षी और अन्य जीव जीवाणु उपभोक्ता बनकर आये तब से प्रकृति का यह चक्र निरन्तर और अबाध गति से चला आ रहा है। जिसको जितनी आवश्यकता है वह उन्हें मिलता रहता है और प्रकृति आगे के लिए अपने में और उत्पन्न करके संरक्षित कर लेती है।

विश्व के सभी देश आज किसी न किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त है। विकासशील देश और विकसित देश अपनी भिन्न–भिन्न समस्याओं के बावजूद इस बात पर एकमत है कि जितनी तेजी से आज पर्यावरण की समस्याएं उठी हैं, चाहे वह जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभावों के कारण हो अथवा औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप हो या कोई अन्य कारण हों, उसको सरकार अथवा जनता अथवा दोनों ही सुधार कर पिछले रूप में नहीं ला सकते।

यदि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य यह समझने लगें कि उनके कृत्यों से ही स्वर्ग, नरक बन रहा है, विशाल प्राकृतिक निधियों के भण्डार वाली धरती रीति हो चली है, भविष्य की बात छोडें, वर्तमान पीढी का जीवन जीना भी दूभर हो गया है। लोगों को समझना होगा कि पर्यावरण के बारे में सम्भवतः यही सोच पर्यावरण शिक्षा का प्रारम्भ माना जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. भावी शिक्षकों की पर्यावररण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. भावी शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता नहीं है।
2. भावी शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति नहीं है।
3. भावी पुरूष एवं भावी महिला शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति के मध्य कोई साार्थक अन्तर नहीं है।
4. ग्रामीण एवं शहरी भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं

राजस्थान के भावी शिक्षकों तक अध्ययन सीमित है।

न्यादर्श

शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में 800 भावी शिक्षकों को अध्ययन हेतु चुना गया है। जिसमें विज्ञान वर्ग के 400 तथा कला वर्ग के 400 भावी शिक्षकों पर अध्ययन किया गया है। जिसमें ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के भावी शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि

चूंकि प्रस्तावित शोध की प्रकृति तुलनात्मक है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध कार्य में पूर्व निर्मित मानकीकृत परिक्षणों तथा स्वनिर्मित मानकीकृत परिक्षणों का उपयोग कर प्रदत्तों का एकत्रीकरण किया गया है।

1. **पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी –** स्वनिर्मित कर मानकीकृत किया गया है।
2. **पर्यावरण जागरूकता परिक्षण –** इस जागरूकता परिक्षण का निर्माण डॉ0 प्रवीण कुमार झा ने किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रस्तुत शोध कार्य में मूल आंकड़ो का विश्लेशण करने हेतु माध्य, प्रमाप विचलन, काई–वर्ग परीक्षण, ऑकड़ों का रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार अन्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

तालिका – 01
भावी शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता

अंको का विस्तार	आवृत्ति	प्रतिशत आवृत्ति	जागरूकता स्तर	माध्य	मानक विचलन
37 – 51	142	35.5	उच्च	31.0775	10.0026
16 – 36	236	59	औसत		
0 – 15	22	5.5	निम्न		

तालिका 01 का विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. केवल 5.5 प्रतिशत भावी शिक्षकों का जागरूकता स्तर निम्न है।
2. 35.5 प्रतिशत भावी शिक्षकों का जागरूकता स्तर उच्च है।

तालिका – 02
भावी शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति

अभिवृत्ति प्राप्तांक	आवृत्ति	प्रतिशत आवृत्ति	अभिवृत्ति की व्याख्या	माध्य	मानक विचलन
135 से अधिक	156	39	अत्यधिक अनुकूल	132.24	18.99
111–135	198	49.5	अनुकूल		
86–110	41	10.25	तटस्थ		
61–85	5	1.25	प्रतिकूल		
61 से कम	0	0	अत्यधिक प्रतिकूल		

तालिका 02 का विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. भावी शिक्षकों के पर्यावरण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का औसत 132.24 है जो कि उनकी पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति को व्यक्त कर रहा है।
2. भावी शिक्षक जो अत्यधिक अनुकूल अभिवृत्ति रखते है उनका प्रतिशत 38.5 है।
5. 35.75 प्रतिशत विज्ञान वर्ग के भावी शिक्षकों का जागरूकता स्तर उच्च है।
6. 66 प्रतिशत कला वर्ग के भावी शिक्षकों का जागरूकता स्तर औसत प्राप्त हुआ है।
7. सभी भावी शिक्षकों का जागरूकता स्तर का माध्य 29.58 भी औसत जागरूकता स्तर की श्रेणी में आता है।

पर्यावरणीय जागरूकता के निष्कर्षों का सारांश

1. अधिकतर भावी पुरूष शिक्षकों का जागरूकता स्तर औसत है।
2. 65 प्रतिशत भावी महिला शिक्षकों का जागरूकता स्तर औसत प्राप्त हुआ है।
3. अधिकतर (66.25 प्रतिशत) भावी ग्रामीण शिक्षकों का जागरूकता स्तर औसत प्राप्त हुआ है।
4. अधिकतर (57.75 प्रतिशत) शहरी शिक्षक पर्यावरण के प्रति औसत जागरूकता स्तर रखते है।

पर्यावरणीय अभिवृत्ति के निष्कर्षों का सारांश

1. भावी पुरूष शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का औसत 131.39 है, जो कि उनकी पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति को इंगित करता है।
2. भावी महिला शिक्षकों की अभिवृत्ति प्राप्तांकों का औसत 128.84 है, जो कि अनुकूल अभिवृत्ति की श्रेणी में आता है।
3. भावी ग्रामीण शिक्षकों के अभिवृत्ति प्राप्तांकों का औसत 128.56 प्राप्त हुआ है, जो कि उनकी अनुकूल अभिवृत्ति को प्रदर्शित करता है।

4. भावी शहरी शिक्षकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का माध्य 131.67 प्राप्त हुआ है, जो कि उनकी पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति को दर्शा रहा है।
5. विज्ञान वर्ग के 49.5 प्रतिशत भावी शिक्षक पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं।
6. कला वर्ग के 47.25 प्रतिशत भावी शिक्षक पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखते है।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान के भावी शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आंकडों के विश्लेषण से जो निष्कर्ष सामने आये हैं उनके आधार पर भावी शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं –

1. यह अध्ययन राजस्थान राज्य तक सीमित था, इसे पड़ोसी राज्यों के साथ जोडते हुए तुलनात्मक रूप दिया जा सकता है।
2. यह अध्ययन राजस्थान के केवल चार विश्वविद्यालयों तक ही सीमित था। नवीन शोध राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों को शामिल करके किया जा सकता है।
3. भावी शोध में विभिन्न विश्वविद्यालयों के सहशिक्षा तथा महिला शिक्षा महाविद्यालयों को शामिल कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. पर्यावरणीय जागरूकता तथा अभिवृत्ति पर सामाजिक – आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
5. पर्यावरणीय जागरूकता तथा अभिवृत्ति पर पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रत्येक क्षेत्र के शोधकार्य की उपादेयता उसके व्यावहारिक उपयोग पर निर्भर करती है। शोध कार्य का अध्ययन कर सम्बन्धित क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञ, अध्यापक, शोधार्थी एवं कार्यकर्ताओं को अपनी तथा समाज एवं समुदाय की समस्याओं को हल करने का प्रयास करना चाहिए। इस दृष्टि से अनुसंधानकर्ता की यह हार्दिक इच्छा है कि पर्यावरण के क्षेत्र एवं संस्कृति व नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में, मूल्य–शिक्षा के क्षेत्र में, समाज के क्षेत्र में, कार्य करने वाले प्रशासक, नियोजक, अध्यापक, प्राध्यापक, शोधकर्ता, सर्वेकर्ता प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों का उपयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देने का लाभ ले सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापिकीय दर्शिका व परिवेशीय अध्ययन– कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली (भारत), 1987. पृष्ठ 44*
2. *खुराना, उषा, पर्यावरण शिक्षा, नई दिल्ली (भारत) : तक्षशिला प्रकाशन, 1994. पेज – 55*
3. *शर्मा, डॉ. हरचरणलाल, परिवेशीय अध्ययन अध्यापक दर्शिका– कक्षा परिषद्, 1992. पेज– 54*
4. *माथुर, ए. एन एवं अन्य, पर्यावरण शिक्षा, देहली (भारत) : हिमांशु पब्लिकेशन्स, 1993, पेज– 180*
5. *सिंह, भोपाल, पर्यावरणीय शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण, नई दिल्ली (भारत) : आर्य बुक डिपो, करोलबाग, 1991, पेज– 163*